+ नवभारत
भोपाल, रविवार, 5 जुलाई 2026

ज्योतिष और मानव सभ्यता का भविष्य

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

मानव सभ्यता के विकास का इतिहास केवल युद्धों, साम्राज्यों, वैज्ञानिक आविष्कारों और राजनीतिक परिवर्तनों का इतिहास नहीं है. यह उतना ही मनुष्य की जिज्ञासा, उसके भय, उसकी आशाओं और ब्रह्माण्ड के साथ उसके संबंधों को समझने के निरन्तर प्रयास का भी इतिहास है. जब आदिम मानव ने पहली बार रात्रि के आकाश की ओर देखा होगा, तब उसने केवल असंख्य तारों को नहीं देखा होगा; उसने उनमें व्यवस्था, लय और रहस्य भी देखा होगा. सूर्य का प्रतिदिन उदय होना, चन्द्रमा का कला परिवर्तन, ऋतुओं का निश्चित क्रम, ग्रहणों का आवर्तन और नक्षत्रों की स्थिरता ने मनुष्य के भीतर यह विश्वास उत्पन्न किया कि ब्रह्माण्ड किसी अराजकता का नहीं, बल्कि एक सुव्यवस्थित व्यवस्था का प्रतीक है. उसी क्षण से मानव का यह प्रयास आरम्भ हुआ कि यदि प्रकृति नियमों से संचालित होती है, तो क्या मानव जीवन भी किसी व्यापक व्यवस्था का अंग है. यही प्रश्न धीरे-धीरे ज्योतिषीय चिन्तन का आधार बना और यहीं से मानव सभ्यता की एक अत्यन्त दीर्घ बौद्धिक यात्रा प्रारम्भ हुई.

समय बदला, सभ्यताएँ बदलीं, राजसत्ताएँ बदलीं, धर्मों का उदय और विस्तार हुआ, विज्ञान ने प्रकृति के अनेक रहस्यों से पर्दा उठाया, औद्योगिक क्रान्ति ने समाज की संरचना बदल दी, सूचना प्रौद्योगिकी ने सम्पूर्ण विश्व को डिजिटल नेटवर्क में बाँध दिया, किन्तु मनुष्य के मूल प्रश्न आज भी वही हैं. वह आज भी जानना चाहता है कि जीवन में अनिश्चितताएँ क्यों आती हैं, सफलता और असफलता का अर्थ क्या है, दु:ख का उद्देश्य क्या है, क्या भविष्य पूर्णत: अनिश्चित है अथवा उसमें भी कोई क्रम विद्यमान है. आधुनिक विज्ञान ने पदार्थ, ऊर्जा, अंतरिक्ष और समय के अनेक रहस्यों को उद्घाटित किया है, परन्तु जीवन का अर्थ, अस्तित्व का उद्देश्य, नैतिक निर्णयों का आधार और मानवीय अनुभवों की गहराई आज भी ऐसे प्रश्न हैं जिन पर विज्ञान और दर्शन दोनों समान रूप से विचार करते हैं. यही कारण है कि तकनीकी युग में भी ज्योतिष जैसी प्राचीन परम्पराएँ केवल जीवित ही नहीं हैं, बल्कि अनेक नए रूपों में पुन: उभर रही हैं.

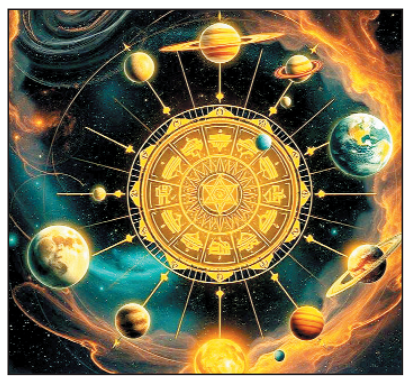

यह मान लेना कि आधुनिकता के आगमन के साथ सभी पारम्परिक विश्वास समाप्त हो जाने चाहिए थे, स्वयं आधुनिक समाज की प्रकृति को न समझ पाने का परिणाम है. समाज केवल वैज्ञानिक तथ्यों पर नहीं चलता. वह संस्कृति, स्मृति, परम्परा, विश्वास, नैतिकता और सामूहिक अनुभवों पर भी आधारित होता है. कोई व्यक्ति एक ओर अंतरिक्ष अनुसंधान में कार्य कर सकता है और दूसरी ओर अपने परिवार के धार्मिक उत्सव में पंचांग देखकर तिथि निर्धारित कर सकता है. कोई चिकित्सक आधुनिक चिकित्सा विज्ञान का विशेषज्ञ हो सकता है और साथ ही किसी शुभ कार्य के लिए शुभ मुहूर्त का सम्मान भी कर सकता है. कोई उद्योगपति करोड़ों रुपये का निवेश आर्थिक विश्लेषण के आधार पर कर सकता है, किन्तु नए उद्योग के उद्घाटन के समय परिवार की सांस्कृतिक परम्परा का भी पालन कर सकता है. यह विरोधाभास नहीं है, बल्कि मानव व्यक्तित्व की बहुआयामी प्रकृति का प्रमाण है.

मनुष्य केवल तर्क का जीव नहीं है; वह संवेदनाओं, स्मृतियों और प्रतीकों का भी जीव है. उसका जीवन केवल गणनाओं से संचालित नहीं होता. उसके निर्णयों में परिवार का प्रभाव होता है, समाज का प्रभाव होता है, परम्परा का प्रभाव होता है और उसके अपने मनोवैज्ञानिक अनुभवों का भी प्रभाव होता है. इसलिए किसी भी विश्वास प्रणाली का अध्ययन केवल इस आधार पर नहीं किया जा सकता कि वह प्रयोगशाला में किस सीमा तक प्रमाणित होती है. सामाजिक विज्ञानों का उद्देश्य यह समझना है कि लोग किसी विश्वास को क्यों स्वीकार करते हैं, वह विश्वास उनके व्यवहार को कैसे प्रभावित करता है और समाज की संरचना में उसकी क्या भूमिका है. इसी दृष्टि से ज्योतिष आधुनिक समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, मानवशास्त्र और सांस्कृतिक अध्ययन के लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय बन जाता है.

ज्योतिष का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष सम्भवत: उसका मनोवैज्ञानिक स्वरूप है. जीवन में ऐसे अवसर बार-बार आते हैं जब व्यक्ति को उत्तरों से अधिक सहारे की आवश्यकता होती है. बीमारी के समय वह केवल औषधि नहीं चाहता, बल्कि आशा भी चाहता है. परीक्षा के समय वह केवल पाठ्यपुस्तक नहीं चाहता, बल्कि आत्मविश्वास भी चाहता है. परिवार में संकट आने पर वह केवल समाधान नहीं चाहता, बल्कि मानसिक संतुलन भी चाहता है. ऐसे समय में अनेक लोग ज्योतिषीय परामर्श को केवल भविष्य जानने का माध्यम नहीं, बल्कि संवाद का माध्यम मानते हैं. यदि यह संवाद उत्तरदायित्व और संवेदनशीलता के साथ हो, तो वह व्यक्ति के भीतर नई ऊर्जा उत्पन्न कर सकता है. यदि यह भय, भाग्यवाद और आर्थिक शोषण का माध्यम बन जाए, तो वही व्यवस्था समाज के लिए हानिकारक सिद्ध होती है. इसलिए ज्योतिष का भविष्य केवल उसकी गणनाओं पर निर्भर नहीं करेगा, बल्कि उसके नैतिक चरित्र पर भी निर्भर करेगा. वर्तमान समय में ज्योतिष के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती तकनीक नहीं, बल्कि विश्वसनीयता है. कृत्रिम बुद्धिमत्ता जन्मपत्रियाँ तैयार कर सकती है, ग्रहों की स्थिति का सूक्ष्म विश्लेषण कर सकती है और कुछ ही क्षणों में विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत कर सकती है.

अन्तत: यह स्पष्ट होता है कि भविष्य का प्रश्न केवल ज्योतिष का नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानव सभ्यता का है. यदि मानव केवल तकनीकी प्रगति को ही विकास मान लेगा, तो वह अपनी सांस्कृतिक स्मृतियों से कट जाएगा. यदि वह केवल परम्पराओं में ही सीमित रहेगा, तो वह नवाचार की क्षमता खो देगा. वास्तविक प्रगति वहीं सम्भव है जहाँ परम्परा और आधुनिकता संवाद करें, विज्ञान और संस्कृति परस्पर सम्मान के साथ आगे बढ़ें, तर्क और संवेदना एक-दूसरे के पूरक बनें तथा ज्ञान का प्रत्येक स्रोत मानव कल्याण की दिशा में प्रयुक्त हो. जब तक मनुष्य अपने अस्तित्व, अपने भविष्य, अपने कर्म, अपने उद्देश्य और इस विराट ब्रह्माण्ड में अपने स्थान को समझने का प्रयास करता रहेगा, तब तक ज्योतिष केवल अतीत की स्मृति नहीं रहेगा, बल्कि मानव सभ्यता के बौद्धिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक विमर्श का एक जीवंत अध्याय बना रहेगा.

जानिए पूजा में फूलों का धार्मिक महत्व और जरूरी नियम

सनातन धर्म में पूजा-पाठ के दौरान फूल अर्पित करने की परंपरा केवल श्रद्धा का प्रतीक नहीं, बल्कि धार्मिक मान्यताओं और शास्त्रीय विधानों से भी जुड़ी हुई है. प्रत्येक देवी-देवता के लिए कुछ विशेष पुष्प प्रिय माने गए हैं, जिन्हें अर्पित करने से पूजा का पूर्ण फल प्राप्त होने और ईश्वर की कृपा मिलने की मान्यता है. वहीं कुछ ऐसे फूल भी हैं, जिन्हें विशेष देवताओं को चढ़ाना वर्जित बताया गया है. ऐसे में यदि पूजा सही विधि और उचित पुष्पों के साथ की जाए तो उसका आध्यात्मिक महत्व और भी बढ़ जाता है.

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भगवान शिव को धतूरा, आक, सफेद कमल और कनेर के फूल अर्पित करना शुभ माना जाता है, जबकि केतकी का फूल शिव पूजा में निषिद्ध है. भगवान विष्णु और श्रीकृष्ण की पूजा में तुलसी दल का विशेष महत्व है. इनके साथ कमल, पीले पुष्प, चमेली और पारिजात भी अर्पित किए जाते हैं. माता लक्ष्मी को कमल का फूल सबसे प्रिय माना जाता है. इसके अलावा गुलाब और गेंदा भी उनकी पूजा में शुभ माने जाते हैं. भगवान गणेश को लाल गुड़हल, लाल कनेर और गेंदा अर्पित किया जाता है, लेकिन तुलसी चढ़ाने की मनाही बताई गई है. वहीं माता दुर्गा और माता काली की आराधना में लाल गुड़हल और लाल गुलाब का विशेष महत्व माना जाता है. हनुमान जी को लाल फूल, विशेषकर लाल गुलाब और गेंदा अर्पित करना शुभ माना जाता है.

पूजा के दौरान कुछ सामान्य नियमों का पालन भी आवश्यक माना गया है. देवताओं को हमेशा ताजे, सुगंधित और स्वच्छ फूल ही अर्पित करने चाहिए. मुरझाए, टूटे हुए या जमीन पर गिरे फूल पूजा में इस्तेमाल नहीं किए जाते. तुलसी दल और बेलपत्र जैसे पूजन सामग्री से जुड़े नियमों का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए. धार्मिक विद्वानों के अनुसार श्रद्धा, पवित्रता और विधि-विधान के साथ अर्पित किए गए पुष्प भगवान के प्रति समर्पण का प्रतीक होते हैं.

योगिनी एकादशी जानिए व्रत का सही महत्व

आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष की योगिनी एकादशी सनातन धर्म में भगवान विष्णु की उपासना के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है. धार्मिक मान्यता है कि इस व्रत को श्रद्धा और नियमपूर्वक करने से पापों का क्षय होता है तथा सुख-समृद्धि, स्वास्थ्य और आध्यात्मिक उन्नति का आशीर्वाद प्राप्त होता है. वर्ष 2026 में योगिनी एकादशी की तिथि को लेकर श्रद्धालुओं के बीच भ्रम की स्थिति बनी हुई है, क्योंकि एकादशी तिथि 10 और 11 जुलाई, दोनों दिनों को स्पर्श कर रही है. ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है कि व्रत किस दिन रखा जाए.

धर्मशास्त्रों में ऐसी स्थिति को एकादशी क्षय कहा गया है. शास्त्रीय नियमों के अनुसार जब किसी भी दिन सूर्योदय के समय एकादशी तिथि पूर्ण रूप से उपलब्ध नहीं होती, तब गृहस्थों के लिए पूर्ववर्ती दिन व्रत रखना श्रेष्ठ माना जाता है. इसलिए इस वर्ष गृहस्थ श्रद्धालुओं के लिए 10 जुलाई 2026 को योगिनी एकादशी व्रत रखना शास्त्रसम्मत माना गया है. वहीं वैष्णव परंपरा का पालन करने वाले भक्त 11 जुलाई को व्रत कर सकते हैं.

व्रत का समापन द्वादशी तिथि में विधिपूर्वक पारण और यथाशक्ति दान-पुण्य के साथ किया जाता है. धार्मिक मान्यता है कि श्रद्धा, संयम और विधि-विधान के साथ किया गया योगिनी एकादशी व्रत जीवन में सकारात्मकता, शांति और भगवान विष्णु की कृपा का माध्यम बनता है.

योगिनी एकादशी व्रत की तैयारियां दशमी तिथि से ही शुरू हो जाती हैं. इस दिन सात्विक भोजन करने, तामसिक आहार से बचने और संयमित जीवनचर्या अपनाने का विधान है. एकादशी के दिन प्रात: स्नान कर भगवान विष्णु का पूजन, तुलसी दल, पीले पुष्प, धूप-दीप और नैवेद्य अर्पित किए जाते हैं. साथ ही ' ? नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जप या विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ विशेष फलदायी माना जाता है. व्रत के दौरान चावल का सेवन वर्जित माना गया है तथा तुलसी के पत्ते एकादशी और द्वादशी के दिन नहीं तोड़ने चाहिए.

जानें 'डी' अक्षर नाम वाले लोग कैसे होते हैं

नाम के पहले अक्षर को लेकर लोगों में हमेशा उत्सुकता बनी रहती है. ज्योतिष और अंकशास्त्र में यह माना जाता है कि व्यक्ति के नाम का पहला अक्षर उसके स्वभाव, व्यक्तित्व और जीवनशैली के बारे में कुछ संकेत दे सकता है. हालांकि यह किसी व्यक्ति के चरित्र या भविष्य का वैज्ञानिक और निश्चित आधार नहीं है. व्यक्ति का व्यवहार उसके संस्कार, परिवेश, शिक्षा और अनुभवों से भी प्रभावित होता है. फिर भी पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार 'द' अक्षर से नाम शुरू होने वाले लोगों में कुछ विशेष गुण देखने को मिलते हैं.

मान्यता के अनुसार 'द' नाम वाले लोग आत्मविश्वासी, मेहनती और अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित माने जाते हैं. ये चुनौतियों का सामना करने से पीछे नहीं हटते और कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखने की कोशिश करते हैं. ऐसे लोग अपने परिवार और मित्रों के प्रति जिम्मेदार होते हैं तथा रिश्तों को महत्व देते हैं. इनके स्वभाव में ईमानदारी और स्पष्टवादिता भी देखने को मिल सकती है, जिसके कारण कई बार ये अपनी बात खुलकर कह देते हैं.

पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार 'द' अक्षर वाले लोग रचनात्मक सोच रखने वाले और नई चीजें सीखने के इच्छुक होते हैं. इन्हें अपने कार्यक्षेत्र में पहचान बनाने की इच्छा रहती है और सफलता पाने के लिए लगातार प्रयास करते हैं. कई बार ये निर्णय लेने में समय लेते हैं, लेकिन एक बार फैसला कर लें तो उसे पूरा करने के लिए पूरी लगन से जुट जाते हैं. इनके भीतर नेतृत्व क्षमता भी मानी जाती है, जिससे ये दूसरों का मार्गदर्शन करने में सक्षम होते हैं.

हालांकि कुछ मान्यताओं में यह भी कहा जाता है कि 'द' नाम वाले लोग कभी-कभी जिद्दी स्वभाव के हो सकते हैं. अपनी बात पर अड़े रहने की आदत के कारण मतभेद की स्थिति भी बन सकती है.

तुलसी माला पहनने के जानिए नियम

लाभ और शास्त्रों में इसका विशेष स्थान

सनातन धर्म में तुलसी को केवल एक औषधीय पौधा ही नहीं, बल्कि देवी स्वरूप और भगवान विष्णु की अत्यंत प्रिय मानी गई है. इसी कारण तुलसी की माला का धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व भी विशेष बताया गया है. वैष्णव परंपरा में तुलसी की माला धारण करना भगवान विष्णु, श्रीकृष्ण और श्रीराम के प्रति श्रद्धा, भक्ति और समर्पण का प्रतीक माना जाता है. धार्मिक ग्रंथों में उल्लेख मिलता है कि तुलसी की लकड़ी से बनी माला धारण करने वाला व्यक्ति सदाचार, संयम और सात्विक जीवन अपनाने के लिए प्रेरित होता है. यही वजह है कि आज भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु नियमित रूप से तुलसी की माला पहनते हैं और जप के लिए भी इसी माला का उपयोग करते हैं.

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार तुलसी की माला धारण करने से मन की चंचलता कम होती है, मानसिक शांति प्राप्त होती है और भगवान विष्णु की विशेष कृपा मिलती है. माना जाता है कि यह माला व्यक्ति को नकारात्मक ऊर्जा से बचाने और आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर करने में सहायक होती है. वैष्णव संप्रदाय में दीक्षा के समय तुलसी की माला धारण कराने की परंपरा भी प्रचलित है, जिसे ईश्वर से जुड़ाव और धर्म के प्रति समर्पण का प्रतीक माना जाता है. इसके साथ ही ' ? नमो भगवते वासुदेवाय', 'हरे कृष्ण' या अन्य विष्णु मंत्रों का जप तुलसी की माला से करना अत्यंत शुभ माना गया है.

तुलसी की माला धारण करने के कुछ धार्मिक नियम भी बताए गए हैं. माला को स्वच्छता और श्रद्धा के साथ पहनना चाहिए तथा उसका सम्मान बनाए रखना आवश्यक माना गया है. कई परंपराओं में मांस, मदिरा और तामसिक भोजन से दूरी बनाए रखने की सलाह दी जाती है.

जानिए वास्तु के अनुसार रसोई की सही दिशा

घर में रसोई केवल भोजन बनाने का स्थान नहीं होती, बल्कि इसे परिवार के स्वास्थ्य, सुख-समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा का केंद्र भी माना जाता है. वास्तु शास्त्र में रसोई की दिशा, उसकी बनावट और उसमें रखी जाने वाली वस्तुओं को विशेष महत्व दिया गया है. मान्यता है कि यदि रसोई वास्तु के अनुरूप बनाई जाए और उसमें निर्धारित नियमों का पालन किया जाए, तो घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है तथा परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिति पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ता है. हालांकि वास्तु संबंधी मान्यताएं धार्मिक और पारंपरिक विश्वासों पर आधारित हैं तथा इनके प्रभावों के वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं.

वास्तु शास्त्र के अनुसार घर की रसोई के लिए सबसे शुभ दिशा आग्नेय कोण (दक्षिण-पूर्व) मानी जाती है. यह दिशा अग्नि तत्व का प्रतिनिधित्व करती है, इसलिए भोजन पकाने से जुड़ी गतिविधियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है. यदि किसी कारणवश इस दिशा में रसोई बनाना संभव न हो, तो उत्तर-पश्चिम दिशा को दूसरा विकल्प माना जाता है. वहीं उत्तर-पूर्व (ईशान कोण)में रसोई बनाने से आमतौर पर बचने की सलाह दी जाती है, क्योंकि यह दिशा पूजा और आध्यात्मिक ऊर्जा का स्थान मानी जाती है. इसी प्रकार घर के मध्य भाग (ब्रह्मस्थान) में रसोई बनाना भी वास्तु के अनुसार उचित नहीं माना जाता. रसोई के भीतर गैस स्टोव या चूल्हे की दिशा को लेकर भी विशेष नियम बताए गए हैं. वास्तु शास्त्र के अनुसार खाना बनाते समय गृहस्वामी या रसोइया का मुख पूर्व दिशा की ओर होना शुभ माना जाता है. कुछ परंपराओं में उत्तर की ओर मुख करके भोजन बनाना भी स्वीकार्य माना गया है.

धार्मिक और पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार रसोई में मां अन्नपूर्णा का वास माना जाता है. इसलिए भोजन बनाने से पहले स्वच्छता, सात्विकता और कृतज्ञता का भाव रखना शुभ माना जाता है. हालांकि घर की योजना बनाते समय वास्तु के साथ-साथ सुरक्षा, वेंटिलेशन, उपयोगिता, अग्नि सुरक्षा और परिवार की व्यावहारिक जरूरतों का भी ध्यान रखना आवश्यक है. वास्तु संबंधी सुझाव आस्था और परंपरा पर आधारित हैं, इसलिए इन्हें अपनाना व्यक्ति की व्यक्तिगत मान्यता और सुविधा पर निर्भर करता है.

राशिफल

दिनांक- 05 से 11 जुलाई 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य मिथुन राशि में, मंगल वृषभ राशि में, वक्री बुध कर्क राशि में ता. 7 को 1/20 दिन से मिथुन राशि में, गुरू कर्क राशि में, शुक्र कर्क राशि में ता. 4 को 3 .53 दिन से सिंह राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा कुम्भ, मीन मेष और वृषभ राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :-इस माह में पांच बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार है और मासारम्भ में बुध, गुरू शुक्र एक राशि स्थित होने से प्रजा में सुख शांति का संचार होगा, शासन की अच्छी योजनाओं का लाभ जनता को मिलेगा. हिमाचल, कश्मीर, उत्तराखण्ड, उत्तरप्रदेश, चंडीगढ़, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र आदि प्रान्तों में अच्छी वर्षा से किसानों को लाभ होगा. ता. 6 को पुनर्वसुयां रवि के प्रभाव से रूई, सोना, चांदी, गुड, खाण्ड, लाख, मोठ, बाजरा, हरड, मजीठ, में तेजी करेगा. ता. 7 को वक्री मिथुने बुध के प्रभाव से सोना, चांदी, रूई में मंदी, होगी.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

बुधवार 08 जुलाई को शीतलाष्टमीं, बसोरा,
शुक्रवार 10 जुलाई को योगिनी एकादशी व्रत,

मेष

व्यापार विस्तार की संभावना बनेगी, धार्मिक कार्यो में रूचि बढ़ेगी, नाते रिश्तेदारों से मुलाकात होगी, लाभदायक योजना में विलंब से कुछ खिन्नता बढ़ेगी,किसी के सहयोग से लाभ होगा, आपकी मुलाकात परिचितों से हो सकती है, सप्ताहान्त में आपकी वित्तीय स्थिति पहले से बेहतर होगी, दूर दराज की योजना लाभदायक रहेगी.

वृषभ

पारिवारिक समस्याओं को लेकर मन कुछ उलझनों में रह सकता है, व्यापार में लाभ की गति धीमी रहने की संभावना है, परीक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी, पारिवारिक कारणों से लंबी यात्रा के अवसर प्राप्त होंगे, विरोधी वर्ग समझौतावादी नीति अपना सकता है, अधिकारी वर्ग आपके कामकाज की तारीफ करेंगे, अतिथि आगमन का योग है.

मिथुन

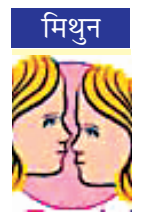

उलझे हुये मामलों में समय व्यतीत होगा, लेकिन आपसी लोगों के सहयोग से परेशानी कम होगी, परिवार में मांगलिक कार्यो का आयोजन आपको प्रसन्नता प्रदान करेगा, संतान को अच्छी सफलता मिलेगी, पैतृक संपत्ति के विवादों को सुलझाने में सावधानी रखें, कामकाजी महिलाओं को परेशानी होगी, घर के पूज्य व्यक्ति के स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

कर्क

यह सप्ताह आपके लिये मनोवांछित साबित होगा, कार्यक्षेत्र में आपकी प्रशंसा होगी, कामकाजी व्यस्तता के बावजूद भी आप परिजनों के साथ समय व्यतीत करेंगे, जीवनसाथी से तारतम्य बना रहेगा, आप बच्चों की उपलब्धिों पर गर्व करेंगे, अतिथि आगमन होगा, जिससे परिवार में प्रसन्नता बनी रहेगी, क्रय-विक्रय से लाभ की संभावना है, नये कार्य में सावधानी रखें.

सिंह

किसी आपसी संबंधों में तनाव की संभावना है, वास्ते वाणी में कुछ संयम से कार्य करें, साझेदारी में सावधानी रखें, कारोबार का ध्यान रखें, आप अपने व्यवहार से सभी को दोस्त बनाने में सफल होंगे, भावनात्मक संबंधों में निकटता आयेगी, सप्ताह के अन्त में किसी के बीमार हो जाने से यात्रा का कार्यक्रम स्थगित कर सकते हैं.

कन्या

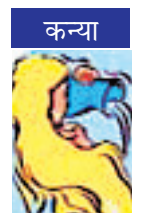

बढ़ते हुये खर्च के कारण कर्ज लेना पड़ सकता है, सफलता की राह में बाधा आयेगी, व्यापारिक योजना के विस्तार की रूपरेखा बनेगी, परिवार में शुभ कार्यो का आयोजन आपको प्रसन्नता देगा, धार्मिक कार्यो में समय व्यतीत होगा, अपने व्यवहार से सभी को खुश कर देंगे, विरोधी वर्ग समस्या पैदा करने का प्रयास करेगा, लेकिन आपको सूझबूझ से परेशानी नहीं होगी.

तुला

इस सप्ताह सामाजिक सक्रियता बढ़ेगी, व्यापारिक लेनदेन के मामले में सफलता मिलेगी, किसी मनोरंजक यात्रा का योग है, सप्ताह के मध्य दूसरों की सलाह को बिना सोचे समझे मानेंगे, तो हानि हो सकती है, अच्छा हो सलाह को अमल में लाने के पूर्व एक बार पुन: सोच विचार कर लें, छात्रों का प्रतियोगी परीक्षा में सफलता के लिये कड़ी मेहनत करना पड़ेगी.

वृश्चिक

खानपान की लापरवाही से स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, भागदौड़ अधिक होगी, व्यापारिक यात्रा में अच्छे समझौते अथवा लाभ की संभावना बनेगी, अधिकारियों से मिलने के लिये समय अनुकूल है, अधिनस्थों के असहयोग से सप्ताह के मध्य में कुछ बाधा उत्पन्न होगी, जो शीघ्र ही सुधरेगी, नौकरी पेशा में रूका हुआ पैसा अथवा पुराना लाभ मिलने की संभावना है.

धनु

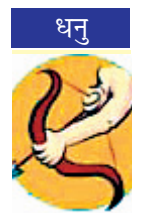

सप्ताह के प्रारंभ में आप जिसे अपना मित्र समझ रहे हैं, वह आपके साथ दुश्मनी निभा सकता है, विशेष सावधानी के साथ कार्य करें, धार्मिक अथवा मांगलिक कार्य का अवसर प्राप्त हो सकता है, साझेदारी के कार्य में तनाव बढ़ने से बड़ी योजना कुछ समय के लिये रूक सकती है, स्थायी संपत्ति के क्रय विक्रय का योग है, विवादास्पद मामले आपके पक्ष में सुलझेंगे.

मकर

पुराना पैसा मिलने से प्रसन्नता होगी, हंसी मजाक में सावधानी रखें, गलतफहमी से विरोध का वातावरण बन सकता है, परिश्रम अधिक करना पड़ेगा, जिसका लाभ देर से मिलेगा, जो कार्य अब तक निपटता नजर आ रहा है, उसे पूरा करने में सफलता मिलेगी, धन के लेनदेन में दूसरों पर भरोसा करने की बजाय खुद देख परख कर निर्णय करें, सभी का सहयोग मिलेगा.

कुम्भ

आपको सफलता के लिये कड़ी मेहनत करना पड़ेगी, राजनेताओं को नये अवसरों से लोकप्रियता मिल सकती है, व्यवसायी वर्ग नये कार्य की शुरूआत कर सकते हैं, आप अपनी वित्तीय स्थितियों से संतुष्ट रहेंगे, निजी जीवन तनावमुक्त रहेगा, घर परिवार में सुख समृद्धि और शांति का प्रभाव रहेगा, सप्ताहान्त में नये कार्य को शुरू करने के लिये आवश्यक साधनों की पूर्ति होगी.

मीन

खर्च के कारण अपनी महत्वपूर्ण योजना को बीच में ही रोकना पड़ सकता है, आत्म विश्वास के बल पर मुश्किल हालात से निकलने में सफलता मिलेगी, वाणी पर संयम रखें, अन्यथा करीबी लोग आपसे दूरी बना सकते हैं, पारिवारिक उत्सव में शामिल होने के अवसर मिलेंगे, व्यापारिक यात्रा में नये कार्य की शुरूआत होगी, परंतु अभी थोड़ा रूकना चाहिये.